रमेश याज्ञिक का साहित्य कर्म : अध्ययन एवं मूल्यांकन

शोध प्रबंध की रूपरेखा

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

में कला संकाय के अन्तर्गत

हिन्दी विषय में पीएच.डी. की उपाधि

हेतु प्रस्तावित

शोध निर्देशक
डॉ. श्रीमती श्रद्धा चन्द्राकर
प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय वि.या. तामस्कर
महाविद्यालय-दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी
खेमलाल रावटे
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय गुरूर
जिला-बालोद (छ.ग.)

प्राचार्य
शासकीय वि.या. तामस्कर
महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

शोध केन्द्र

शासकीय वि.या. तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

1. शोध शीर्षक

रमेश याज्ञिक का साहित्य कर्म : अध्ययन एवं मूल्यांकन

2. प्रस्तावना

साहित्य मानव चेतना की अभिवक्ति है। चेतना अनुभुति की सघनता तथा चिन्तन के समन्वित आधार पर स्वरूप ग्रहण करती है। अनुभुति का सम्बन्ध हृदय की संवेदन-शीलता से है।

इस तरह साहित्य का क्षेत्र व्यापक और अंतहीन है । साहित्य मानव की आवश्यकताओं का अध्ययन और उनकी पूर्ति का सांस्कृतिक साधन है। समाज के समस्त वर्गो की आशाओं, आकांक्षाओं और जीवन की विभिन्न स्थितियों का वह सजीव दर्पण है जिसमें समाज में घटित होने वाले समस्त परिवर्तनों का प्रतिबिम्ब उसमें दिखाई पड़ता है।

ऐसे ही समाजिक परिवर्तनों को अपने लेखन के माध्यम से उकेरने वाले श्री रमेश याज्ञिक छत्तीसगढ़ के प्रतिष्ठित लेखक -बुद्विजीवी थे।

हिन्दी साहित्य में उनका अत्यंत महत्वपूर्ण अवदान उनका यात्रा -लेखन है, जो अखबारों में 'यात्री के पत्र' शीर्षक से लम्बे समय तक नियमित स्तम्भ के रूप मे प्रकाशित हुआ है। इस स्तम्भ में स्व. याज्ञिक देश- भर में घुमते हुए अपने अनुभवों को सामाजिक -राजनैतिक संदर्भो में विश्लेषित किया करते थे। यह हिन्दी में अपने ढंग का अनूठा लेखन है जो पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुआ। देशबन्धु तथा सबेरा संकेत में यह प्रमुखता से पढ़ा जाता था। बाद में यह पुस्तकाकार के रूप में तीन संग्रहों -'यात्री के पत्र', 'जगहें और लोग' तथा 'अपने शहर में अजनबी' में संकलित हुआ। स्व. याज्ञिक ने बड़ी संख्या में राजनैतिक टिप्पणियां लिखी हैं तथा सामाजिक विषयों पर भी प्रचुर लेखन किया है। वे कहानीकार भी थे। उनकी कहानियों का एक संकलन 'बाबूजी आप कब लौटेंगे' प्रकाशित है। उनमें अपने जीवन के विविध प्रसंगों का चित्रण किया है।

स्व. याज्ञिक राजनांदगांव के रियासत कालीन इतिहास के गहरे जानकार थे। 'सबेरा संकेत' में इस विषय पर उन्होंने नियमित रूप से स्तम्भ लिखा था। जो 'शहर अपना - तब और अब' पुस्तक के रूप में संकलित है। उनकी अन्य पुस्तकों में 'अहिंसा के पक्ष अंधश्रद्धा के विरोध में' तथा 'वह सब जो दिखता है' प्रमुख है। मौलिक लेखन के अलावा उन्होंने गुजराती के दो उपन्यासों तथा कथाकार मतों पर केन्द्रित एक पुस्तक का अनुवाद भी किया है। वे अनेक पुरस्कारों तथा अलंकरणों से विभूषित किये गये। इनमें म.प्र. साहित्य परिषद का गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान, बख्शी सृजन पीठ का वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान, महात्मा गांधी 150वीं जयंती का प्रतिभा सम्मान, राजभाषा विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र का सम्मान शामिल है।

स्व. याज्ञिक एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता तथा सजग नागरिक थे। अपने लेखन एवं जीवन में उन्होंने सदैव धर्म निरपेक्षता, लोकतांत्रिकता एवं तर्कशीलता को तरजीह दी। वे अंधविश्वास, धर्माधता, जातिवाद और कूपमंडूकता की प्रवृत्तियों के विरूद्ध निरंतर संघर्षरत रहे।

प्रस्तावित शोध कार्य का प्रयोजन स्व. रमेश याज्ञिक के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन तथा विश्लेषण करना है तथा इस प्रक्रिया में उनकी सृजनात्मकता के विविध पक्षों को रेखांकित करते हुए हिन्दी साहित्य के मौजूदा परिदृश्य में उनकी अलक्षित - सी उपस्थिति को रेखांकित करना है।

इस ‘शोध प्रबंध’ को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर अध्ययन किया जायेगा -

प्रस्तावना

अध्याय - 1 - रमेश याज्ञिकः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 - व्यक्तित्व

1.2 - रचना संसार

अध्याय - 2 - पत्र साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

2.1 - यात्री के पत्र

2.2 - जगहें और लोग

2.3 - वो सब जो दिखता है

अध्याय - 3 - कथा साहित्य का शिल्पगत विवेचन

3.1 - दादाजी आप कब जायेंगे?

3.2 - असंकलित कहानियां

अध्याय - 4 - स्थानीय इतिहास संबंधी साहित्य का अनुशीलन

4.1 - शहर अपना - तब और अब

4.2 - अपने शहर में मैं अजनबी

अध्याय - 5 - आत्मकथात्मक साहित्य का अध्ययन

5.1 - और अकेला मैं

5.2 - अन्य आत्मकथात्मक टिप्पणियां

अध्याय - 6 - पुष्कल सामग्री का विवेचन

6.1 - संस्मरणात्मक साहित्य

6.2 - व्याख्यान

6.3 - भेंटवार्ता

6.4 - वैचारिक टिप्पणियां

अध्याय - 7 - समालोचन एवं मूल्यांकन

7.1 - समकालीन जीवन और राजनीति के संदर्भ

7.2 - स्थानीय इतिहास की विवेचन दृष्टि

7.3 - कथा -साहित्य की सर्जनात्मकता

7.4 - पत्र साहित्य का वैशिष्ट्य

7-5 - रचनात्मक वैशिष्ट्यः परिदृश्य में स्थान

उपसंहार

परिशिष्ट - संदर्भ ग्रंथ सूची

3. पूर्व में किये गये कार्यों की समीक्षा

रमेश याज्ञिक छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण लेखकों में से एक है। उन्होंने समाज में घटित प्रसंगों तथा स्वयं के जीवन की घटनाओं को अपनी लेखन का विषय बनाया है। इसका प्रमाण उनकी

प्रकाशित एवं अप्रकाशित पुस्तकें है। समकालीन समाज के विविध चरित्रों एवं घटनाओं को उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया है।

हिन्दी के समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में उनकी रचनाओं एवं आलेखों का प्रकाशन होता रहा। 'यात्री के पत्र' शीर्षक से प्रकाशित स्तंभ लेखन अत्यंत लोकप्रिय रहा । लेकिन अब तक उनकी रचनाओं पर आलोचनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है । इस दृष्टि से प्रस्तावित शोध - प्रबंध उन पर केन्द्रित पहला समीक्षात्मक उद्‍यम होगा ।

4. उद्‍देश्य

इस शोध कार्य के माध्यम से बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जो सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक बदलाव हमारे समाज में दिखाई देते हैं, उसका रमेश याज्ञिक के यात्रा साहित्य के साक्ष्य में विवेचना किया जायेगा तथा इन बदलावों के कारणों की ठोस पड़ताल की जायेगी इस अध्ययन के द्वारा समाज में हो रहे बदलाव के कारणों की पहचान की जायेगी ।

इस अध्ययन में सामाजिक बदलाव, जीवन संघर्ष और जीवन यथार्थ का मूल्यांकन रमेश याज्ञिक की रचनाओं के माध्यम से किया जावेगा । उनकी रचनाओं में व्यक्त विचारधारा, वास्तविक अनुभव, रचना प्रक्रिया एवं अभिव्यक्ति पक्ष का मूल्यांकन प्रस्तावित है ।

5. प्रस्तावित कार्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान

रमेश याज्ञिक के रचनाओं के संदर्भ में कोई शोध कार्य अभी तक नहीं हो पाया है । अत्यंत गंभीर सृजनात्मक कार्य के बावजूद वे उपेक्षा के शिकार रहें हैं । उन पर समीक्षात्मक लेख आदि भी प्रकाशित नहीं हुए हैं ।

6. प्रस्तावित शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु साहित्य के मूल्यांकन एवं विमर्श के प्रचलित मानदण्डों का प्रयोग करने के साथ सामाजिक वास्तविकता और यात्रा साहित्य की उप पर निर्भरता को ध्यान में रखते हुए समाज वैज्ञानिक पद्धतियों की सहायता भी ली जायेगी । विषय वस्तु की गहराई तक पहुंचने के लिए साहित्यिक समीक्षात्मक अध्ययन अधिक उपयोगी सिद्ध होगा ।

7. प्रस्तावित कार्य के अपेक्षित परिणाम

स्व. रमेश याज्ञिक छत्तीसगढ़ अंचल के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जो उच्च कोटि के लेखन के बावजूद हिन्दी साहित्य के अखिल भारतीय परिदृश्य में प्रायः अचर्चित रहे । उनका अपूर्ण योगदान यात्रा-लेखन है जो शास्त्रीय अर्थ में यात्रा वृत्त के विधागत सीमांत में सिमटें रहने के बजाय एक ऐसे पाठ में संयोजित होता है, जिसमें निबंध, यात्रा वृत्त, आख्यान, संस्मरण, वैचारिक टिप्पणी का एक मिला-जुला रूप दिखाई पड़ता है । इस कंपोजिट विधा के पुरस्कर्ता और एक मात्र रचनाकार स्वयं याज्ञिक जी हैं । हिन्दी में इस तरह के लेखन का उद्यम अन्यत्र नहीं मिलता । इस दृष्टि से याज्ञिक जी का योगदान अपनी तरह का अनुठा है । हिन्दी-जगत का ध्यान, दुर्भाग्य से इसकी तरफ नहीं गया । महत्वपूर्ण बात यह है कि कहानी, यात्रा लेखन, वैचारिक गद्य या स्थानीय इतिहास लेखन जैसी विभिन्न विधाओं में सक्रिय उनकी सृजनात्मकता के केन्द्र में उनकी मूल्य निष्ठा, प्रतिबद्धता और समाज सजगता बराबर दिखाई देती हैं । प्रस्तावित शोध प्रबंध के माध्यम से याज्ञिक जी के इन्हीं विशिष्टताओं तथा रचनाधर्मिता का विवेचना किया जायेगा ।

8. संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

याज्ञिक रमेश - यात्री के पत्र - प्रकाशन नीड़ राजनांदगांव 1996

याज्ञिक रमेश - जगहें और लोग (यात्री के पत्र-02) - पुस्तक नीड़ राजनांदगांव 1996

याज्ञिक रमेश - शहर अपना : तब और अब - क्रांति प्रकाशन राजनांदगांव 2001

याज्ञिक रमेश - अहिंसा के पक्ष : अंध श्रद्धा के विरोध में - क्रांति प्रकाशन, राजनांदगांव 2002

याज्ञिक रमेश - और अकेला मैं - निबंध - क्रांति प्रकाशन राजनांदगांव 2003

याज्ञिक रमेश - वो सब जो दिखता है - संस्मरण - क्रांति प्रकाशन राजनांदगांव 2003

याज्ञिक रमेश - दादा जी ! आप कब जायेंगें ? - क्रांति प्रकाशन राजनांदगांव 2004

याज्ञिक रमेश - तो मैने कहा : व्याख्यान, संस्मरण, पत्र - क्रांति प्रकाशन, राजनांदगांव 2003

संदर्भ ग्रंथ

नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास, नोयडा, मयूर पेपर वैक्स 1973

अली मुस्ताक - आधुनिक पत्रकारिता, इलाहाबाद, साहित्य संगम 2004

द्विवेदी मनीषा - पत्रकारिता के सिद्धांत एवं मूल तत्व, नई दिल्ली कनिष्क पब्लिशर्स 2006

त्रिपाठी मधुसूदन - भारत में प्रेस कानून, नई दिल्ली, ओमेंगा पब्लिशिर्स 2006

चंन्द्र कुमार - जनसंचार माध्यमों में हिन्दी, नई दिल्ली क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी

जैन संजीव कुमार - मीडिया लेखन एवं जनसंचार, भोपाल, कैलाश पुस्तक सदन

जैन संजीव कुमार - पत्रकारिता सिद्धांत और स्वरूप, भोपाल, कैलाश पुस्तक सदन

शर्मा नरेन्द्र कुमार - स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता, नई दिल्ली, ओमेंगा पब्लिकेशन्स 2011

चोपड़ा जे.के. - पत्रकारिता समस्या और समाधान, नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिशिन हाउस 2009

गुप्ता यू.सी. - पत्रकारिता समस्या और समाधान, नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिशिन हाउस 2009

गोदरे विनोद - हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन 2000

चौबे कृपाशंकर - पत्रकारिता के उत्तर आधुनिक चरण, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन 2003

शर्मा ठाकुरदत्त - हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन 2000

परिहार कालू राम - मीडिया के सामाजिक सरोकार, नई दिल्ली, अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स

चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद - हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, दिल्ली प्रभात प्रकाशन 2009

राजकिशोर - समकालीन पत्रकारिता मूल्यांकन और मुद्दे, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन 1994

सिन्हा राकेश - राजनीति पत्रकारिता, दिल्ली प्रभात प्रकाशन 2009

गुप्ता आर.के. - हिन्दी पत्रकारिता इतिहास एवं विकास, नई दिल्ली ओमेंगा पब्लिकेशन्स 2008

पांडे रत्नाकार	-	हिन्दी पत्रकारिता, प्रेमचंद और हंस, नई दिल्ली, प्रवीण प्रकाशन 1988
शुक्ल रामचंद्र	-	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान 2003
जैन निर्मला	-	निबंधो की दुनिया : निराला, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन 2009
कपूद श्यामचंद्र	-	हिन्दी साहित्य का इतिहास, दिल्ली, ग्रंथ अकादमिक 1991 खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद-हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर 1985
शर्मा रामविलास	-	कथा विवेचन और गद्य शिल्प, दिल्ली, वाणी प्रकाशन 2008
द्विवेदी हजारी प्रसाद	-	हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन 1992
गुप्त प्यारे लाल	-	प्राचीन छत्तीसगढ़ : रायपुर पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय 1973
उपाध्याय बलदेव प्रसाद	-	छत्तीसगढ़ परिचय बिलासपुर, हिन्दी प्रकाशन 1958
वर्मा भगवान सिंह	-	छत्तीसगढ़ का इतिहास, भोपाल मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2001
शुक्ल मदन लाल	-	छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन, बिलासपुर, भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति 1998
शुक्ला सुरेश चंद्र	-	छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास, रायपुर शिक्षा दूत, ग्रंथागार प्रकाशन 2003
शेष शंकर	-	छत्तीसगढ़ का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी 1973
शुक्ला शांता	-	छत्तीसगढ का सामाजिक आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग 1988

पत्र - पत्रिकाएं

हिन्दी पत्रिका	-	वसुधा, संपादक -कमला प्रसाद,भोपाल
हिन्दी पत्रिका	-	पहल, संपादक - ज्ञानरंजन, भोपाल
हिन्दी पत्रिका	-	सहित्य अमृत,संपादक - त्रिलोकनाथ चतुर्वेदी, नई दिल्ली
हिन्दी पत्रिका	-	हंस, संपादक - राजेन्द्र यादव, नई दिल्ली
हिन्दी पत्रिका	-	ज्ञानदोय, संपादक - रविन्द्र कालिया, भारतीय ज्ञानयी, नई दिल्ली

समाचार पत्र

सबेरा संकेत, नई दुनिया, नवभारत, देशबंधु

9. शोधार्थी द्वारा प्रकाशित शोध पत्र की संख्या - 01

शोध निर्देशक का हस्ताक्षर

डॉ. श्रीमती श्रद्धा चन्द्राकर

डॉ. श्रद्धा चंद्राकर
प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय वि.या.ता. स्नातकोत्तर
स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी का हस्ताक्षर

खेमलाल रावटे

अग्रेषित

28.11.2016

प्राचार्य

Principal
Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

ISSN - 0973-1628

151

Issue - 151, Vol-XV (8), October - 2016

www.researchlink.co

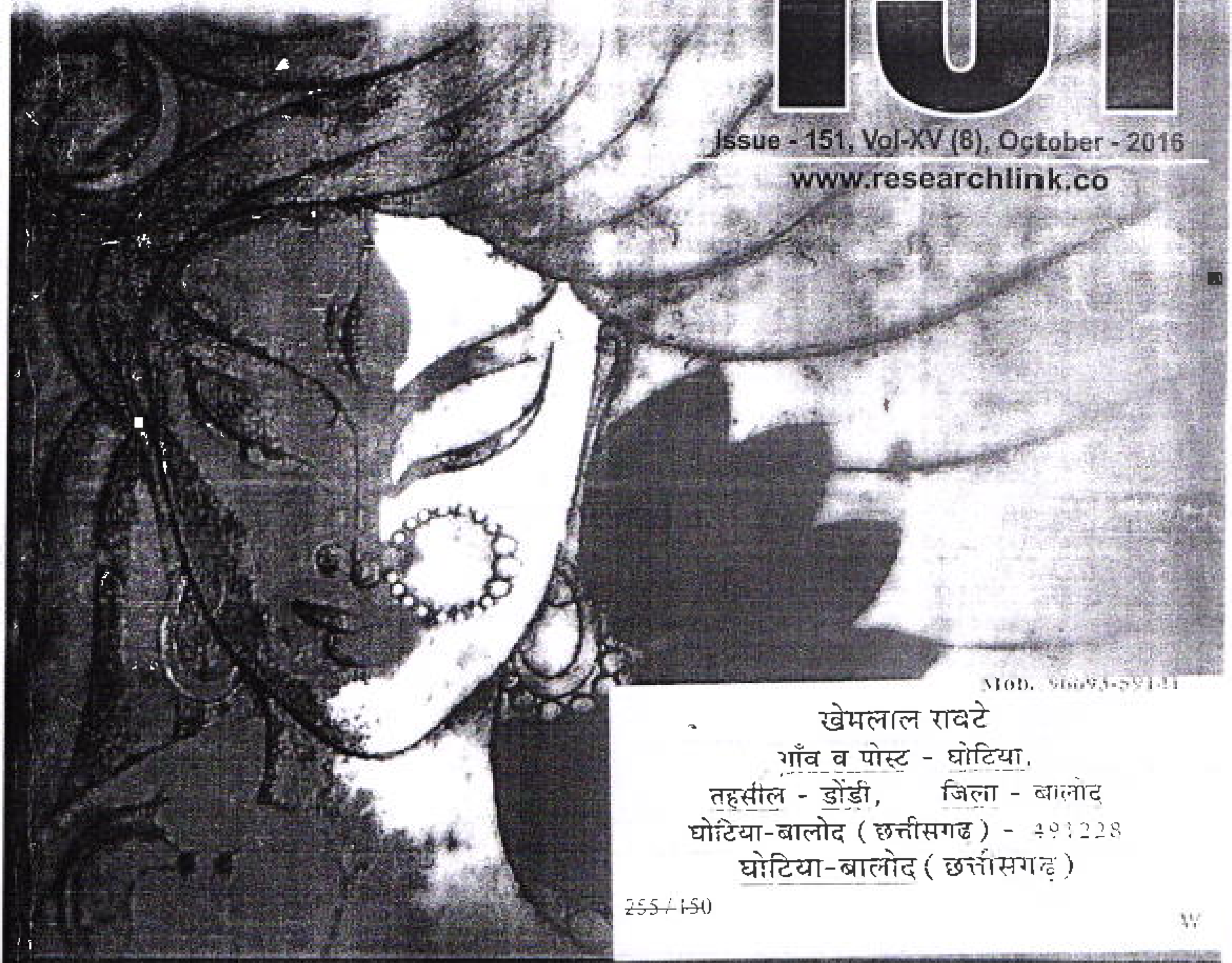

Mob. [illegible]

खेमलाल राकटे

गाँव व पोस्ट - घोटिया,

तहसील - डोंडी, जिला - बालोद

घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ) - 491228

घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

255 / 150

W

An International Registered and Referred Monthly Journal

RESEARCH Link

Impact Factor 2.782 2015

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

₹250/-

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

An International, Registered and Referred Monthly Journal - Impact Factor 2.782 (2015)
ISSN No. 0973-1628
रिसर्च-151 लिंक
(कला, समाजविज्ञान एवं वाणिज्य)
• वर्ष- XV (8)
• अक्टूबर - 2016

सम्पादक
डॉ.रमेश सोनी
विधि-विशेषज्ञ एवं सलाहकार
डॉ.अनिल पारे (पूर्णतःऑनररी)
सहयोग
डॉ.वीणा चौबे, डॉ.मोहम्मद इम्तियाज़ अहमद
प्रचार-प्रसार एवं विज्ञापन
विशाल राजौरिया

सम्पादकीय/प्रबन्ध-प्रकाशन कार्यालय
81, सर्वसुविधा नगर एक्सटेंशन, बंगाली चौराहे के पास, कनाड़िया रोड़, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पीछे, इन्दौर - 452016
मोबाइल नं. 099264-97611
094253-49611 एवं 098260-75077
e-mail address :
researchlink@yahoo.co.in
एक प्रति : ₹ 250/-
संस्थागत शुल्क
वार्षिक : ₹ 3000/- (रुपये तीन हजार केवल)
(डी.डी.शुल्क अतिरिक्त)
व्यक्तिगत-शुल्क
वार्षिक (चार अंक) ₹ 1500/- (रुपये पंद्रह सौ केवल)
❖ सदस्यता फॉर्म एवं नियमावली अंक के अंतिम पृष्ठ पर देखें।
❖ रिसर्च लिंक का प्रकाशन-प्राध्यापकों का, प्राध्यापकों के द्वारा, प्राध्यापकों के लिए - एक अव्यावसायिक सहयोगी प्रयास।
❖ सम्पादन, सम्पादन-सहयोग, प्रकाशन एवं संचालन अवैतनिक।
❖ देश अथवा विदेश के किसी भी विश्वविद्यालय अथवा शोध कमेटी द्वारा 'रिसर्च लिंक' में प्रकाशित शोध-पत्रों के मान्य न किए जाने की स्थिति में प्रबंधन की कोई जवाबदारी नहीं होगी।
❖ विषय विशेषज्ञों के निर्णय के अनुसार 'रिसर्च लिंक' में शोधपत्रों की स्वीकृति, संशोधन एवं प्रकाशन का एकाधिकार सम्पादन एवं प्रबंधन के पास रहेगा।
❖ 'रिसर्च लिंक' का अंक वेबसाइट पर, प्रत्येक माह की 05 तारीख को अपलोड किया जाता है, जिसे आप निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं।
❖ सदस्यों को 'रिसर्च लिंक' की प्रति, प्रत्येक माह की 15 तारीख को साधारण डाक द्वारा भेजी जाती है। किसी भी कारण से अतिरिक्त प्रति प्राप्त करने के लिए ₹ 300/- रुपये का बैंक ड्राफ्ट भेजना होगा।
❖ 'रिसर्च लिंक' संबंधी सभी विवाद केवल इन्दौर न्यायालय के अधीन होंगे।

सम्पादकीय

तनाव के माहौल में, उत्साह और आस्था का पर्व - नवरात्र

❁ डॉ. रमेश सोनी

01 अक्टूबर को संसार की आदिशक्ति माँ की आराधना का नौ दिनी शारदीय नवरात्र, घट स्थापना के साथ प्रारंभ हो रहा है। इस बार नवरात्रि 9 दिन न होकर, 10 दिन मनाने के योग बन रहे हैं। इस संदर्भ में पंडितों का मानना है, कि नवदुर्गा के साथ दशम महाविद्या की साधना भी हो सकेगी।

भारतीय संस्कृति में माँ की आराधना प्राचीन काल से ही रची-बसी है। हमारे प्राचीन ग्रंथों - **'देवी भागवत', 'चतुर्वर्गचिंतामणि', 'कालोदय', 'मदनरत्न', 'निर्णयसिंधु'** आदि में देवी की शक्ति के बारे में वर्णन मिलते हैं। **यह धारणा है कि नवरात्र में शक्ति जागृत रहती है।** माँ शक्ति की उपासना-आराधना का यह उत्सव, जीवन में ऊर्जा, उल्लास, चेतना संपन्न बनाकर मानव की मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला होता है। **नवरात्र को की जाने वाली पूजा-अर्चना को, अश्वमेघ-यज्ञानुष्ठान के समान फलदायी माना गया है। महाभारत में प्रमाण है कि भगवान श्रीकृष्ण ने यह अनुष्ठान किया था, महर्षि व्यास ने भी देवी की उपासना का रहस्य राजा जन्मेजय को बताया था।** तब से लेकर अब तक इस देवी आराधना के इस पर्व को प्रतिवर्ष दो बार मनाने की सांस्कृतिक परंपरा जारी है और आगे भी रहेगी।

'रिसर्च लिंक' का प्रस्तुत अंक-151

यह सब संयोग की बात है कि 'रिसर्च लिंक' का बहु-प्रतीक्षित अंक-150 जिस तरह अपने साथ अपना शुभ मुहुर्त लेकर आया, जिसमें प्रथम पूजनीय श्री गणेशजी की चतुर्थी के साथ शिक्षाविद्, दार्शनिक डॉ.राधाकृष्णन् का जन्मदिन 5 सितम्बर, जो गुरुओं को समर्पित है, वह आया था। ठीक उसी क्रम और संदर्भ में अंक-151 आपके हाथों में सौंपते हुए प्रसन्नता स्वाभाविक है। इसलिए भी कि यह भी अपने साथ आराधना के शारदीय नवरात्र को लेकर आया है। ...सिर्फ आया ही नहीं, इस विशिष्टता के साथ आया कि हर बार 9 दिन मनाई जाने वाली नवरात्रि 10 दिवसीय के योग हैं। 10वें दिन दशम महाविद्या की साधना विशिष्ट है...एक और विशेषता यह कि इस अवधि में 4 दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभा, अमृत सिद्धि आदि शुभ योग भी हैं। एक और खास बात यह कि इस बार माँ शेर पर सवार न होकर अश्व पर आ रही हैं। ...इसे 'रिसर्च लिंक' पर देवता की विशेष कृपा न कहें, तो और क्या कहेंगे? इसलिए भी कि, इन तमाम विशेषताओं का शुभ प्रसंग और मुहुर्त, अंक-151 से पुनः जुड़ गया है। पिछले 15 बरस से जो आपकी आत्मीयता, स्नेह और सहयोग प्राप्त हो रहा है, वही आगे भी मिलता रहेगा। हमें पूरा भरोसा है हम आपकी कसौटी पर खरा उतरते रहेंगे।

इस समय कला और कलाकारों पर प्रतिबंध की बेमानी बहस

कला, चिड़िया है / चिड़िया बहेलियों की बचाकर नज़र / ...जो छोड़ कर चली गई थी शहर। जंगल नहीं छोड़ना चाहती / शहर नहीं लौटना चाहती / यद्यपि जंगल में उसके बच्चे, घर-परिवार कुछ भी सुरक्षित नहीं है। बहेलिये का डर और असुरक्षा के बावजूद वह किंचित सशंकित, कतई दुःखी नहीं है। उसका कहना है - शहर का अपना सुख है, दुःख है। जंगल का अपना सुख है, दुःख है। फिर भी जंगल के दुःख के सामने अन्य सुरक्षा और कि संरक्षा उसे चाह नहीं है... क्योंकि उस पार से बम, बारुद, बंदूक की आवाज़ है। खतरे मंडरा रहे हैं, ...राष्ट्र और प्रजातंत्र से बड़ा कोई सुख नहीं है।

कविता...चिड़िया से सहमत है। इन दिनों, चिड़िया चौतरफा बहेलियों से घिरी है। कला और कलाकारों पर प्रतिबंध की बेबात बहस, पहेली है।। चिड़िया हो कि कलाकार, सबके लिए आकाश खुला है। मन में खोट और कलाओं की ओट लेकर इस पर बहस करना नितांत बेमानी है।

......बेहतर होगा नवरात्रि के इस सांस्कृतिक पर्व पर हम ऐसे सत्कर्मों को करने का संकल्प लें, जो समाज और राष्ट्र को एकसूत्र में बांधकर अंधेरे से उजाले की ओर ले जाए। धर्म, सम्प्रदाय, ऊँच-नीच के भेद मिटाकर सुख-शांति ओर खुशहाली दे सकें।

❁❁

An International, Registered & Referred Monthly Journal : **Hindi Literature**
Research Link - 151, Vol - XV (8), October - 2016, Page No. 51-52
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

रमेश याज्ञिक का अनुभव संसार

प्रस्तुत शोधपत्र, रमेश याज्ञिक के अनुभव संसार को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। यह उनके यथार्थ अनुभवों पर आधारित है। याज्ञिकजी के अनुभव संसार से ज्ञात होता है कि, समाज में जब हम कदम रखते हैं, तो हमें विभिन्न क्षेत्रों में विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं। ये विसंगतियाँ हमें झकझोर कर रख देती हैं। याज्ञिकजी कहते हैं कि हमें समाज के प्रत्येक क्षेत्र में विसंगतियाँ देखने को मिलती है। विसंगतियों और विडम्बनाओं के सम्बंध में अनेक आलेख लिखे हैं, जो 'वो सब जो दिखता है', में संकलित हैं। इन आलेखों में विसंगतियों और समस्याओं के समाधानक लिए अनेक नियम बताए हैं और उपाय भी किए हैं, पर ये खत्म न होकर और बढ़ते ही जाते हैं। इस दृष्टिकोण से याज्ञिकजी के आलेख सदैव प्रासंगिक रहेंगे।

डॉ.(श्रीमती) श्रद्धा चन्द्राकर* एवं खेमलाल रावटे**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ ही साथ चिन्तनशील प्राणी भी है। वह सदैव किसी न किसी विशय पर चिन्तन करते रहता है। जब मनुष्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना कदम रखता है तो उसे विविध प्रकार के अनुभव होते हैं। ये अनुभव कुछ कड़वे तो कुछ मीठे होते हैं। इन्हीं अनुभवों में सामाजिक विडम्बनाएं और विसंगतियां हमें झकझोर कर रख देती हैं।

छत्तीसगढ़ के सुविख्यात लेखक रमेश याज्ञिक ने अपने आलेख स्तंभ वो सब जो दिखता है, यात्री के पत्र, अहिंसा के पक्ष : अंधश्रद्धा के विरोध में, जगहें और लोग, तो मैंने कहा, शहर तब और अब आदि रचनाओं के माध्यम से अपने जीवन में देखे और खुद पर घटित हुए घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया है। जिसमें हमें समाज के विभिन्न विडम्बनाओं एवं विसंगतियों का साक्षात्कार हो जाता है।

"रमेश याज्ञिक को पढ़ना, एक समझदारी के साथ अपने समय में प्रवेश करना है। आज का यथार्थ ऐसा धुंध भरा है, जिसमें चीजों की सही शक्लें पहचानना कठिन है। उन पर चढ़े मुखौटों को भेदने के लिए जागरूकता और तर्क सम्मत जीवन–दृष्टि की आवश्यकता है। व्यक्ति की जीवन में घटित होने वाली घटनाएँ या सामाजिक हलचलें–उन्हें विश्लेषित करने के लिए जो इतिहास–बोध और–वैचारिक संकलन अपेक्षित है, वह रमेश याज्ञिक के लेखन में विद्यमान है।"(1)

"वो सब जो दिखता है", रमेश याज्ञिक का एक महत्वपूर्ण आलेख स्तम्भ है। इसमें 41 आलेखों का संकलन है। याज्ञिक जी ने इन आलेखों के माध्यम से स्वानुभूत घटनाओं के माध्यम से समाज के विभिन्न विडम्बनाओं एवं विसंगतियों का साक्षात्कार कराया है। ये आलेख जीवन के विविध रंगों से रंगे हुए है।

"नीले आसमान के नीचे सूरज के तेज रोशनी में और–रात के घने अंधेरे में। जाड़ा, सर्दी, बारिश, रेल के डिब्बे में या किसी रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्म, वेटिंग रूम, बस अड्डा या बस की तकलीफ देह यात्रा। हर स्थिति ने मुझे अवलोकन कर, सोचने का और लिखने का मौका दिया।"(2)

"पर सम–विषम स्थितियाँ लिखने के लिए प्रेरित करती है, ऐसा नहीं है। लिखने के लिए सबसे अधिक और ठोस मसाला देता है, लोगों का बिहेबीयर यानी आचरण–व्यवहार। मान्यताओं और कथनी करनी की विसंगतियाँ।"(3)

28 अप्रैल 1985 को प्रकाशित "पैसे का रंग कैसा?", में काले धन अर्थात दो नम्बर के पैसे के संदर्भ में लिखा है कि, जब–जब हमारे देश में नयी सरकार बनती है, सभी अपने–अपने अंदाज में काले धन या दो नम्बर के पैसे को खत्म करने के लिए नये–नये अंदाज में घोषणा करते हैं, लेकिन काले धन खत्म ही नहीं होता है। इसके लिए शासन तरह–तरह की उपाय आजमाता है, आयोग गठित करते है, अनेक तरह के प्रलोभन दिये जाते हैं, पर ऐसे कोई आसार नहीं दिखते कि दो नम्बर का पैसा बनाना लोग बंद कर दें। इसका कारण भी स्पष्ट है कि बजट के बाद एक महीने के भीतर जिन चीजों पर कोई नया कर नहीं लगाया जाता, उनके भी दाम बढ़ जाते हैं। जिन चीजों पर आबकारी की दरों में अगर एक पैसा टैक्स बढ़ा है, तो उपभोक्ता से पाँच और दस ज्यादा वसूला जाता है।

"पूंजीवादी व्यवस्था में काला पैसा जनरेट होता ही रहता है, परंतु अन्य देशों में उसके प्रमुख दो उपयोग हैं, राजनीति और आमोद–प्रमोद। हमारे देश में दो नम्बर के पैसे का तीसरा भी उपयोग है, धार्मिक किया–कलाप। जिन जाति या सम्प्रदाय के लोग जितना अधिक काला पैसा कमातें हैं, उनके मंदिर धर्म स्थल और धार्मिक आयोजन उतने ही भव्य होते हैं।

**शोध निर्देशक एवं प्राध्यापक (हिन्दी विभाग), शा.व्ही.वाय.टी.स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)*
***शोधार्थी एवं सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग), शासकीय महाविद्यालय, गुरूर, जिला-बालोद (छत्तीसगढ़)*

"समाज में स्मगलर हो या शराब ठेकेदार सबको सम्मान मिल जाता है। खरीद लेते हैं वे सम्मान, क्योंकि वे धार्मिक कामों के लिए, सम्प्रदाय की राजनीति के लिए पैसों का उपयोग करते हैं।"(4)

"तो काले धन या दो नम्बर के पैसे को खत्म करने की घोषणाएँ रोज हर बार नये अंदाज में होती है, और गाहे–ब–गाहे छापे-वापे भी मारे जाते है। पचासों करोड़ की अघोषित आय के साथ सैकड़ो लोगों के संबंध होने की बात बतायी जाती है। लोग हर बार ये समझते है कि अब दो नम्बर के पैसे वालों की शामत आई। पर वे बेचारे नहीं जानते कि दो नम्बर के पैसे से ही सब रफा-दफा हो जाता है।"(5)

काले धन का मूल कारण पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को मानते हुए कहा है, पूंजीवादी अर्थशास्त्र में विकास के साथ दो नम्बर का पैसा बढ़ेगा और उसे किस प्रकार रोका जा सकता है, का कोई सिद्धांत नहीं बनाया। काला धन व्यापारी और उद्योगपति ही बनाते हैं। कालेधन में रिश्वत लेने और देने की भी जबरदस्त भूमिका है। जिसमें अधिकारी और नौकरशाहों की भूमिका रहती है। बिना रिश्वत के दो नम्बर का पैसा नहीं बनता। व्यापारी या उद्योगपति दस प्रतिशत रिश्वत में खर्च करता है, तो वह बीस से तीस प्रतिशत तक दो नम्बर का पैसा खुद के लिए बनाता है। दो नम्बर के पैसे की जरूरत धर्म, राजनीति और आमोद–प्रमोद के लिए हैं और ये तीनों चीजें कभी भी कम होने वाली नहीं है।

चिकित्सा व्यवसाय में भी काफी विसंगतियाँ देखने को मिलती है। जो हमें परेशान कर हमारा शोषण भी करते रहता है। चिकित्सा जगत की विसंगतियों पर याज्ञिक जी ने बहुत सारे आलेख लिखे हैं। याज्ञिक जी आप बीती घटना बताते हैं कि – उसे एक अजीब बीमारी थी, जब वे चलते थे, खासकर शाम के समय तो ऐसा महसूस होता था कि लहरों पर चल रहे हैं, पैर सीधे नहीं पड़ रहे हैं। नागपुर के डॉक्टर ने उन्हें पेशाब, खून की जांच, मस्तिष्क का एक्सरे, नाक, कान, गले की जांच करने के बाद ब्रेन स्केनिंग की सलाह दे डाली। नागपुर के इलाज में कोई लाभ नहीं मिला। दुर्ग के डॉक्टर के पास दिखाने से पता चला कि उन्हें ओट्टो सेरेलिसिस है, जिसमें कान के पर्दे के पीछे एक सेमी सर्कुलर कैनाल होती है, उसमें एक फ्लुईड (प्रवाही) भरा होता है। दुर्ग के डॉक्टर ने पहले की सब दवाई बंद कराकर एक महीने की दवाई लिखी, उससे उनकी तबीयत ठीक हो गई।

याज्ञिक जी एक और आप बीती बताते हुए डॉक्टर के कारनामों को हमारे समक्ष रखा है। उन्हें जीभ के नीचे सूजन आ जाती थी। दवाओं से ठीक नहीं हुआ तो नागपुर में इंग्लैण्ड से आर.सी.सी. कर लौटे डॉक्टर के पास दो बार पथरी का ऑपरेशन कराया। फिर भी ठीक नहीं हुआ। उसके बाद मुम्बई के ख्याति प्राप्त ई.एन.टी. सर्जन के पास भी दो बार ऑपरेशन कराया, फिर भी समस्या कुछ दिन बाद ज्यों की त्यों बनी रही। उसके बाद दुर्ग के सिविल सर्जन (डॉ. आर.के. तिवारी) ने ऑपरेशन कर जीभ के नीचे से दो छोटी–छोटी पथरियां निकाली। दो महीने बाद जब लेखक जर्मनी गए तो बर्लिन में डॉक्टरों ने पहले के ऑपरेशन के सब कागजात देखे तो पता चला अंतिम ऑपरेशन ही सही हुआ, बाकी सबने आपका शोषण किया है।

हमारी आम धारणा रहती है कि बड़े-बड़े शहर के डॉक्टर ज्यादा जानकारी रखते हैं और ईलाज भी अच्छे करते हैं। यह सोच कर हम अपने शहर, गाँव, छोटे शहर के डॉक्टरों की अनदेखी करते हैं, यह हमारा भ्रम है।

स्पेशलाईजेशन (विशेषज्ञता) के भी बुरे नतीजे आ रहे हैं। चिकित्सा विज्ञान में स्पेशलाईजेशन के दो रूप है, एक सरकारी दूसरा प्राइवेट यानी निजी प्रेक्टिस वालों का। विशेषज्ञ डॉक्टर जब सरकारी होता है, तो वह पूर्ण रूपेण ब्यूरोकेट अर्थात नौकरशाह होता है। विशेषज्ञ डॉक्टर सरकारी अस्पताल में सिर्फ अपने ही हिस्से का जाँच करता है और आगे का काम दूसरों पर छोड देता है। सभी डॉक्टरों का अलग–अलग दायरा होता है, क्लिनिक खोलते हैं, तो उनका स्वरुप ही बदल जाता है वह मरीज के शरीर के सभी हिस्सों की जाँच करता है और सलाह मशविरा करता है।

वर्तमान में छुट्टा (चिल्हर) की एक बड़ी समस्या है। इसकी वजह से हम अपने दैनिक जीवन में रोज कहीं न कहीं छले जाते हैं। यात्रा करते समय बस, ऑटो रिक्शा, सामान खरीदी में दुकान आदि जगहों पर चिल्हर न होने का बहाना बनाकर पूरा रूपया ही वसूला जाता है। दुकानों में जबरदस्ती किसी सामान को थमा देते हैं। रोजगारी (चिल्हर) के संकट से निपटने के लिए कुछ चतुर व्यापारियों ने अपनी स्वयं की मुद्रा रूपी कूपन बनवा लिए है। खुल्ले पैसे लौटाने की जगह ये कूपन टिका देते हैं। इससे ग्राहक को पुनः उसी दुकान में जाना पड़ता है। कुछ लोग चिल्हर की समस्या को देखते हुए बट्टे पर चिल्हर देते है। ये बट्टा प्रचलित ब्याज की दर से भी ज्यादा होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रमेश याज्ञिक ने अपने आलेख स्तम्भ "वो सब जो दिखता है", में जीवन के विविध अनुभवों को उकेरा है। लेखक ने जहाँ भी विडम्बनाएं देखी, उन सबको हमारे सामने रखा है। तात्कालीन समाज में जो विडम्बनाएं थी, वह आज भी दिखाई देती है। इन सारी विसंगतियों और समस्याओं के समाधान के लिए अनेक नियम बनाए जाते हैं और उपाय भी किए जाते हैं, पर ये खत्म ना होकर और बढ़ते ही जाते हैं। इस दृष्टिकोण से देखते हैं, तो याज्ञिक जी के आलेख की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

<u>संदर्भ</u> :

(1) श्रीवास्तव, रमाकांत : अहिंसा के पक्ष अंधश्रध्दा के विरोध में – रमेश याज्ञिक।

(2) याज्ञिक, रमेश : वो सब जो दिखता है।

(3) याज्ञिक, रमेश : वो सब जो दिखता है।

(4) याज्ञिक, रमेश : वो सब जो दिखता है, पृष्ठ 14.

(5) याज्ञिक, रमेश : वो सब जो दिखता है, पृष्ठ 10.

❁❁